BA Part 1 Philosophy Hons paper 1st 2019-20

Dr. Arti Kumari
Asso. Prof.
Deptt. Of Philosophy
B.N. College
T. M.B.U, Bhagalpur

सांख्य दर्शन ने परमतत्व के रूप में प्रकृति और पुरुष दो परम की सत्ता को स्वीकार किया है। इस सांख्य दर्शन को द्वैतवादी दर्शन कहा जाता है। सांख्य दर्शन में विश्व की व्याख्या के लिए प्रकृति और पुरुष दो तत्वों और अस्तित्व को स्वीकृति की मुहर लगाई है। प्रकृति और पुरुष दो विपरीत स्वरूप के स्वामी हैं। प्रकृति अचेतन, जड़ तत्व, नित्य, त्रिगुणात्मिका, त्रिरूपात्मिका, भोग्या, प्रसवधर्मिक इत्यादि से युक्त है। इसके विपरीत पुरुष के स्वरूप की विस्तृत व्याख्या ईश्वर कृष्ण ने सांख्य-कारिका में इस प्रकार की है –

"तस्माच्चविपर्यासात्सिद्धं साक्षित्वमस्य पुरुषस्य।
कैवल्यं माध्यस्थ्यं द्रष्टृत्वमकर्तृभावश्च ॥"

उपर्युक्त श्लोक के आधार पर स्पष्ट है कि पुरुष का स्वरूप प्रकृति से विपरीत है। पुरुष साक्षी, केवल, निस्त्रैगुण्य, माध्यस्थ, उदासीन एवं अकर्ता है। प्रकृति जहाँ अचेतन है वहीं पुरुष चेतन, विषयों का ज्ञाता तथा द्रष्टा है। प्रकृति अचेतन होने के कारण ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम नहीं है। ज्ञान की उपलब्धि चेतन तत्व को ही हो सकती है और वह पुरुष है। पुरुष सुख दुःख से परे उदासीन होता है, वह निर्गुण, निष्क्रिय, अकर्ता है। सांख्य ने इसे नित्य, अपरिणामी और स्वयंभू माना है। परिणाम प्रकृति का धर्म है। अतः पुरुष इससे परे है। पुरुष का विनाश नहीं होता
अतः नित्य तत्व है। साथ ही पुरुष को कोई उत्पन्न नहीं करता अतः स्वयंभू अज है।

पुरुष के अस्तित्व के लिए प्रमाण – सांख्य दर्शन में प्रकृति

(1.) संघात-परार्थत्वात् - सांख्य दर्शन के अनुसार संसार के सभी पदार्थ संघात या सावयव हैं। इनका अपना कोई प्रयोजन नहीं होता। बल्कि ये दूसरे के प्रयोजन सिद्ध करने के लिए होते हैं। प्रयोजन या उद्देश्य चेतन का धर्म है। सावयव पदार्थ अपने आप में अचेतन होते हैं। अतः इनका अपना प्रयोजन न होकर ये दूसरे के प्रयोजन के साधनमात्र होते हैं। सांख्य दर्शन में प्रकृति, महत् (बुद्धि), अहंकार आदि सावयव पदार्थ हैं जिनका अपना प्रयोजन नहीं है। अतः ये किसी अन्य के प्रयोजन के साधन हैं और वह प्रयोजन पुरुष है।

(2.) त्रिगुणादिविपर्ययात् - ~~प्रकृति और~~ विश्व की सारी वस्तुएँ त्रिगुणात्मक हैं क्योंकि यह त्रिगुणात्मिका प्रकृति से उत्पन्न होती हैं। इन वस्तुओं में सुख-दुःख, राग-मोह इत्यादि उत्पन्न करना इनका स्वभाव या धर्म है। संसार की सभी वस्तुएँ त्रिगुणात्मिका होने के कारण इसके विपरीत निर्गुणत्व सत्ता की स्वीकार करना आवश्यक है। वह सत्ता पुरुष है। यदि भाव है तो अभाव की सत्ता भी आवश्यक है। अतः इन गुणों का अभाव केवल निर्गुण पुरुष में ही संभव है।

(3) अधिष्ठानात् - सांख्य दर्शन का मानना है कि संसार की सभी वस्तुएँ त्रिगुणात्मक हैं। अर्थात् तम, रजस् एवं सत् से उत्पन्न होने के कारण ये वस्तुएँ सुख-दुःख और मोह उत्पन्न करने वाली हैं। परन्तु ये वस्तुएँ जड़ या

अचेतन हैं। उन्हें संचालित या प्रेरित करने के लिए एक चेतन तत्व की सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है। वह चेतन तत्व पुरुष है।

(4) ~~भोक्ति~~ ~~भोक्त्रि~~ भोक्त्रि भावात् — संसार की वस्तुएं सुख-दुःख और मोह उत्पन्न करनेवाली भोग्य पदार्थ हैं। ये सब स्वयं अचेतन होने के कारण अपना उपभोग स्वयं नहीं कर सकती। इस प्रकार इन भोग्य पदार्थों के लिए एक भोक्ता की आवश्यकता होती है। वह भोक्ता पुरुष है।

(5) कैवल्यात् प्रवृत्तेश्च — मोक्ष के लिए प्रयास से भी पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। दुःख के संपूर्ण विनाश को मोक्ष माना जाता है। दुःखों का विनाश या कैवल्य प्राप्त करने के लिए शास्त्र में कई मार्ग बताए गए हैं। इस प्रकार मोक्ष या कैवल्य प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध होने के कारण पुरुष की सत्ता प्रमाणित होती है।

पुरुष बहुत्व या अनेकात्मवाद — सांख्य दर्शन पुरुष की संख्या एक न मानकर अनेक मानता है। इसे ही अनेकात्मवाद का सिद्धान्त माना गया है। अनेकात्मवाद की पुष्टि के लिए सांख्य दर्शन में अनेक तर्क प्रस्तुत किए गए हैं:-

(1) जन्म, मरण एवं इन्द्रियों की ~~अनेकता~~ से व्यवस्था से आत्मा या पुरुष की सत्ता सिद्ध होती है। संसार की व्यवस्था से भी इसकी पुष्टि होती है। संसार में कोई जन्म लेता है तो दूसरा मृत हो जाता है। कोई मूक है तो कोई अन्य बधिर है। पुरुष के एक होने की स्थिति में एक के जन्म लेने या मरण होने की स्थिति में सभी का जन्म एवं मरण निश्चित हो जाता। इसी प्रकार एक के अंधा या ~~अ~~ बधिर होने पर शेष पुरुष भी अंधे या बधिर हो जाते। परन्तु ऐसा व्यवहार में नहीं होता। अतः पुरुष

(2) धर्मादि कार्यों में सभी की प्रवृत्ति नहीं होती। कोई धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त होता है तो कोई उसमें आस्था नहीं रखता। पुरुष एक होने की स्थिति में धर्मादि कार्यों में सभी की प्रवृत्ति होती परन्तु ऐसा नहीं होता। जिससे यह सिद्ध होता है कि पुरुष अनेक हैं (अयुगपत् प्रवृत्तेश्च)।

(3) समस्त संसार त्रिगुणात्मक है तथा समस्त जीवों की उत्पत्ति सत्व, रज एवं तम से हुई है। इसके बावजूद सभी एक समान नहीं हैं। कुछ लोग सत्व प्रधान हैं, जैसे - देवता, योगी आदि। इसके विपरीत मनुष्य आदि रज प्रधान हैं। पशुओं में इसके विपरीत तमोगुण की प्रधानता होती है। अगर पुरुष एक ही होता तो सभी प्राणी एक समान होते परन्तु उनमें विषमता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इससे पुरुष की अनेकता की पुष्टि होती है (त्रैगुण्यविपर्ययात्)।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर दो परम तत्वों के रूप में प्रकृति के साथ-साथ पुरुष की सत्ता को सांख्य दर्शन ने स्वीकार किया है। प्रकृति जहाँ अचेतन, क्रियाशील, अजा, प्रसवधर्मी, त्रिगुणात्मिका, त्रैरूपात्मिका एवं जड़ तत्व है जिससे विश्व का विकास क्रमशः होता है। इस विकास प्रक्रिया के लिए एक चेतन तत्व की सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है जो द्रष्टा है साथ ही संसार की वस्तुओं को भोगने के लिए भोक्ता। प्रकृति के विपरीत चरित्र अर्थात् निष्क्रियता, माध्यस्थ्य, सुख-दुःख से परे, सत् चित् आनन्द अर्थात् ज्ञान की उपलब्धि प्राप्त करनेवाले पुरुष की सत्ता मानना आवश्यक

पुरुष की सत्ता को स्वीकार न किया जाए तो द्वैतवादी
सांख्य दर्शन का विश्व के विकास, मोक्ष इत्यादि विचारों
की अवधारणा असत्य सिद्ध हो जाएगी इसके कारण
पुरुष की सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है।